नारी : मूल्य विघटन और परम्परागत नैतिकता की निरर्थकता (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

6

डॉ. रजनीश कौशिक*
डॉ0 स्वाति भारद्वाज**

आधार पीठिका :

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद आधुनिकता बोध के विकास के कारण परम्परागत जीवन मूल्यों के प्रति लोगों की आस्था टूटने लगी थी। नारी के जीवन की कक्षाएँ सीमित करने वाले धर्म, नीति और अध्यात्म को वैज्ञानिक दृष्टि से समृद्ध जीवन ने गहरे आघात पहुँचाने शुरु किये। बदली हुई सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों के कारण आधुनिक जीवन दृष्टि से समग्र परिवर्तन हुआ। स्वतंत्रता के बाद बदले हुए सामाजिक जीवन और जीवन दृष्टि के कारण रचनात्मक अभिव्यक्ति का अनुभव जगत बदल गया। जीवन और परिवेश को आँकने के परिमाण भी बदलने लगे। धार्मिक संस्थाओं द्वारा निर्मित आदेशों, नीति, मूल्यों व बन्धनों की असारता स्पष्ट हो चुकी थी। धर्म सम्मत जाति व्यवस्था ने ही जाति के रूप में असमानता, शोषण और घृणा का जाल फैलाया था और धर्म के तहत उसे कायम रखने के लिए कर्मवाद सिद्धान्त के रूप में लागू किया था जो दलितों के दिमाग और व्यक्तित्व पर छा गया था। किन्तु जन्म–मरण के कई रहस्य जब वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं में उद्घटित होकर सामने आने लगे तो धर्म–दर्शन की तमाम मान्यताएँ और विश्वास अब मानव–मन की कमजोरी और कायरता को स्पष्ट करने लगे।

सामाजिक और व्यक्तिगत सम्बन्धों का केन्द्र बिन्दु परिवार है जो कि सामूहिक संस्थाओं की अन्तिम कड़ी माना जाता है, परन्तु मानवीय सम्बन्धों में आई दरारों और मूल्यगत परिवर्तन के कारण परिवार का ढाँचा टूट गया है। स्वतन्त्रता के बाद वाली जिन भीषण यातनाओं से देश को गुजरना पड़ा था उससे पारिवारिक मूल्यों का विघटन बहुत तेजी से होता गया और टूटने की प्रक्रिया तीव्र से तीव्रतम होती गयी।

आधुनिक युग ने नारी को स्वतन्त्र व्यक्तित्व–विकास के स्तर पर ही नहीं, बल्कि कानूनी रूप से और आर्थिक रूप से स्वावलम्बी और स्वतंत्र बनने का मौका दिया है। स्वतंत्र रूप से विचार करने की उसकी समता ने अपने योग्य पुरुष

*समाज शास्त्र विभाग, साहू जैन कालेज, नजीबाबाद
**भूगोल विभाग, वर्धमान कालेज, बिजनौर

चुनने का अधिकार दिया और परम्परागत विवाह संस्था के प्रति उसकी धारणा बदलने लगी। विवाह की परम्परागत मान्यताओं और मूल्यों ने नारी के सम्पूर्ण जीवन को उसकी पवित्रता, अधिकारों और इच्छाओं को पुरुष प्रधान व्यवस्था के अनुसार निर्मित किया था। सम्बन्धों को बनाये रखने के लिए उसके मन में जन्म जन्मान्तर की, पतिव्रत धर्म या पति परायणता जैसी, मान्यताओं से उसे बाँधकर रखा था। विवाह संस्था के पुर्न मूल्यांकन और नारी–पुरुष सम्बन्धों के नाजुक और लचीले प्रश्नों का हल खोजने की आवश्यकता नये भावबोध और आधुनिकता बोध ने निर्माण की थी, जो भारतीय परिवेश में एक नये मोड़ का सूचक है। प्रस्तुत अध्ययन इन्हीं बदलते सन्दर्भों की दिषा में एक प्रयास है।

शोध प्रारूप

प्रस्तुत शोध अध्ययन उत्तर प्रदेश के जनपद बिजनौर के मुख्यालय (बिजनौर नगर) की, सोद्देश्य प्रतिदर्शग्रहण पद्धति के आधार पर चयनित, महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के अध्ययन पर आधारित है। सभी चयनित छात्राओं को दो वर्गों स्नातक तथा स्नातकोत्तर में विभाजित किया है। अध्ययन हेतु तथ्यों का संकलन साक्षात्कार अनुसूचि प्रविधि द्वारा किया गया। अध्ययन के अन्तर्गत दो परिकल्पनायें की गयी हैं। **प्रथम– वर्तमान भारतीय नारी ने परम्परागत नैतिकता के ढकोसले को उतार फेंका है। द्वितीय– भारतीय नारी अब सोचने लगी है कि जीवन वही नहीं है जो हमें दिया गया है, अपितु जीवन वह है जो हम अपने लिए जीते हैं।**

उपलब्धियाँ

अध्ययन हेतु चयनित छात्राओं से मूल्य विघटन और परम्परागत नैतिकता सम्बन्धी विचारों का अध्ययन विभिन्न नाजुक एवं लचीले सवालों के माध्यम से किया गया।

महिलाएँ हमारी कुल आबदी का आधा भाग है, परन्तु शिक्षा और रोजगार सहित अनेक क्षेत्रों में उसकी भागीदारी बहुत कम है। भारत जैसे विशाल देश में महिलाओं की कुल जनसंख्या का लगभग 28 प्रतिशत ही शिक्षित है तथा उससे बहुत कम महिलाएँ रोजगारशुदा हैं, अर्थात् आर्थिक रूप से आत्म निर्भर हैं, जो निश्चित ही एक चिन्ता का विषय है। शायद यही कारण है कि आज भी भारतीय नारी जिसमें शिक्षित नारी भी सम्मिलित है, विभिन्न सामाजिक कुरीतियों का शिकार रही है, नाजायज परम्पराओं को ढो रही है। अतः छात्राओं से साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से यह पूछा गया कि **"क्या नारी उत्थान के लिए स्त्री शिक्षा एवं निर्भरता की अनिवार्यता महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है।"** इस सम्बन्ध में उनके

प्रत्युत्तरों (सारणी संख्या–1) से स्पष्ट होता है कि अधिकांश (78.33 प्रतिशत) छात्राएँ मानती हैं कि नारी उत्थान के लिए स्त्रियों का शिक्षा प्राप्त करना तथा आर्थिक रूप से आत्म निर्भर होना बहुत आवश्यक है। दूसरी ओर 18.33 प्रतिशत छात्राएँ ऐसी भी हैं जो स्वयं शिक्षा प्राप्त कर रही हैं, परन्तु नारी शिक्षा एवं उसकी आर्थिक निर्भरता को आवश्यक नहीं मानती। ऐसी छात्राएँ (3.33 प्रतिशत) भी पायी गयी जिन्होंने अपना कोई मत व्यक्त ही नहीं किया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि नारी अपने उत्थान के लिए जागरूक तो हुई, किन्तु पूर्ण रूप से नहीं। यहाँ यह तथ्य भी प्रकाश में आया है कि स्नातक स्तर की छात्राओं की अपेक्षा स्नातकोत्तर स्तर की छात्राएँ अधिक जागरूक है।

परम्परागत एवं नवीन नैतिक मूल्यों के सन्दर्भ में छात्राओं से जब यह पूछा गया कि **"क्या स्त्री सम्बन्धी विभिन्न सामाजिक, धार्मिक (जैसे– विधवा विवाह, पर्दाप्रथा, दहेज प्रथा आदि) कुरीतियों की समाप्ति एवं नये मूल्यों की स्थापना होनी चाहिए?"** इस सम्बन्ध में उनके प्रत्युत्तरों (सारणी संख्या–2) से ज्ञात होता है कि समग्र की अधिसंख्यक (81.67 प्रतिशत) छात्राएँ चाहती हैं कि समाज में व्याप्त विभिन्न सामाजिक, धार्मिक कुरीतियाँ समाप्त होनी चाहिए तथा नये सामाजिक मूल्यों की स्थापना होनी चाहिए तथा नये सख्त कानून बनाये जायें, ताकि आधुनिक भारत में महिला को खुली हवा में साँस लेने का अधिकार प्राप्त हो। जैसा कि राजस्थान में आज भी बाल–विवाह, सती प्रथा आदि कुरीतियों के दर्शन यदा–कदा हो जाते हैं। सन् 1987 में सती प्रथा पर प्रतिबन्ध के बावजूद देवराला में रूपकँवर सती हुई, जिस देवराला में रूपकँवर सती हुई उसे आज भी एक पवित्र स्थान माना जाता है। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि ऐसी छात्राएँ भी डिग्री कक्षाओं में अध्ययनरत हैं जो इस प्रकार की सामाजिक, कुरीतियों के विरुद्ध नहीं है, यद्यपि ऐसी छात्राएँ बहुत कम (5.83 प्रतिशत) हैं।

इतिहास गवाह है बल्कि वर्तमान भी इस बात का साक्षी है कि **नारी पुरुष दासता की जंजीरों में जकड़ी हुई एक कठपुतली थी और है। जब–जब उसने मुक्त होना चाहा तब–तब उसे एहसास हुआ कि इसका तो अपना कोई निजी अस्तित्व ही नहीं है, उसका कोई वजूद ही नहीं है। विवाह से पूर्व पिता की कैद, विवाहोपरान्त पति की कैद और अन्त में बेटों की मोहताज। क्या यही उसका जीवन है न तो वह स्वावलम्बी ही है और न ही उसका कोई स्वाभिमान। वह पुरुष दासता से मुक्त कैसे हो? तब आज की पढ़ी–लिखी और प्रगतिशील नारी ने रास्ता अपनाया स्वावलम्बन का, अपने स्वाभिमान को बटोरने का। इस सम्बन्ध में छात्राओं से यह**

जानना आवश्यक समझा गया कि "क्या मुक्ति की चाह ने ही नारी को अधिक स्वावलम्बी और स्वाभिमानी बनाया है?" इससे सम्बन्धित प्रत्युत्तरों (सारणी संख्या–3) से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र की आधी से कुछ अधिक (51. 67 प्रतिशत) छात्राएँ ही हमारे इस मत से सहमत हैं जो सहमत नहीं (26.67 प्रतिशत) हैं उनका मानना है कि स्वावलम्बन का रास्ता मुक्ति की चाह के कारण नहीं, अपितु पढ़ने–लिखने के बाद स्वयं को सिद्ध करने, परिवार की आय बढ़ाने अर्थात् पति को आर्थिक सहयोग पहुँचाने के कारण ही आज की नारी ने स्वावलम्बन का रास्ता अपनाया है यही कारण है उसके भीतर स्वाभिमान भी पैदा हुआ है। यह सत्य ही है कि स्त्री हो या पुरुष स्वावलम्बन उसको स्वाभिमानी बनाता है। समग्र की (21. 66 प्रतिशत) छात्राओं ने हमारे इस प्रश्न पर कोई राय प्रकट नहीं की।

सामाजिक और व्यक्तिगत सम्बन्धों का केन्द्र बिन्दु परिवार है जो कि सामूहिक संस्थाओं की अन्तिम कड़ी माना जाता है। परन्तु मानवीय सम्बन्धों में आयी दरारों और मूल्यगत परिवर्तन के कारण परिवार का ढाँचा टूट गया है। स्वतंत्रता के बाद वाली जिन भीषण यातनाओं से देश को गुजरना पड़ा था, उससे पारिवारिक मूल्यों का विघटन बहुत तेजी से होता गया और टूटने की प्रक्रिया तीव्र से तीव्रतम होती गयी। शायद इसी कारणवश व्यक्तिगत सम्बन्ध टूटने लगे। पति–पत्नी के रिश्ते बेमानी लगने लगे। इस सम्बन्ध में छात्राओं से यह पूछा गया कि **"क्या वर्तमान में पति–पत्नी सम्बन्धों में दरार का मुख्य कारण पारिवारिक मूल्यों का विघटन है?"** अध्ययन से ज्ञात हुआ कि समग्र की अधिक संख्यक (70. 83 प्रतिशत) छात्राओं की मान्यता सकारात्मक है। जबकि मात्र 15 प्रतिशत छात्राएँ ऐसा नहीं मानती तथा 14.7 प्रतिशत छात्राएँ इस सम्बन्ध में अपनी अनभिज्ञता प्रकट करती है। (सारणी संख्या–4) नकारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करने वाली छात्राओं का व्यक्तिगत साक्षात्कार लेने पर ज्ञात हुआ कि पति–पत्नी सम्बन्धों में दरार का मुख्य कारण कुछ हद तक एक ओर जहाँ पारिवारिक मूल्यों का विघटन है वहीं दूसरी ओर व्यक्तिगत कारण अत्यधिक है जैसे आर्थिक तंगी, विवाहोपरान्त पर स्त्री–पुरुष सम्बन्ध, पत्नी का पति से ऊँचे ओहदे पर पहुँचना, बच्चों का न होना, विचारों में तारतम्य स्थापित न होना आदि।

वर्तमान समय में प्रत्येक वर्ग आधुनिकता की परिभाशा अपनी सुविधानुसार गढ़ रहा है। चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, जवान हो या बूढ़ा या फिर विभिन्न भूमिकाओं का निर्वहन करने वाले विभिन्न व्यक्ति। इस सन्दर्भ में अध्ययन के दौरान छात्राओं से यह ज्ञात करना भी आवष्यक समझा गया कि **"क्या नये आधुनिकता बोध का अर्थ स्त्री का चाहर दीवारी से बाहर निकलना है?"** सूचनादाताओं के

प्रत्युत्तरों (सारणी संख्या–5) से स्पश्ट होता है कि आधे से कुछ अधिक (52.5 प्रतिषत) छात्राएँ मानती हैं कि स्त्रियों के आधुनिक होने का अर्थ है घर से बाहर की दुनिया को देखना, चाहर दीवारी के बन्धन से मुक्त होना, पति, सास–ससुर आदि की दासता को धता बताना, पाश्चात्य परिधान पहनना, खाना न बनाना, अकेले अथवा संगी सार्थियों के साथ पिक्चर देखना आदि। 47.5 प्रतिशत छात्राएँ जो इस सम्बन्ध में नकारात्मक दृष्टिकोण अपनाती है उनकी मान्यता है कि आधुनिक से अभिप्रायः यह है कि स्त्री प्रत्येक क्षेत्र में अपनी योग्यता साबित करें, योग्य होते हुए भी चाहर दीवारी के भीतर रहकर अपनी योग्यता का दमन न होने दें, स्वतंत्र रूप से विचार कर अपनी क्षमता से अपने योग्य पुरुष चुनने का अधिकार आदि। परिणाम स्वरूप यह कहा जाये कि वर्तमान आधुनिक युग ने नारी को स्वतंत्र व्यक्तित्व विकास के स्तर पर ही नहीं, बल्कि कानूनी रूप से और आर्थिक रूप से स्वावलम्बी और स्वतंत्र बनने का मौका दिया है तो गलत नहीं होगा।

"भला है बुरा है जैसा भी है, मेरा पति मेरा देवता है, लगड़ा रहे या अन्धा, लूला रहे या काना, कोढ़ी रहे या पागल, बूढ़ा हो या प्रौढ़–पति साक्षात् परमेश्वर होता है" यही शिक्षा भारत में छुटपन से ही औरतों को दी जाती है। इस सम्बन्ध में भी छात्राओं से उनके विचार जानना आवश्यक समझा गया और उनसे पूछा गया कि क्या वे इस तर्क से सहमत हैं कि **"पतिः जैसा भी है उसके लिए देवता है?"** समग्र की अधिसंख्यक (98.33 प्रतिशत) छात्राओं ने नकारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, जिन मात्र 1.67 प्रतिशत छात्राओं ने अपनी सहमति जताई वे स्नातक स्तर की कक्षाओं में अध्ययनरत हैं, जबकि स्नातकोत्तर स्तर की समस्त छात्राओं ने इस मत का विरोध किया है। (सारणी संख्या–6) इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय महिला को छुटपन से दी जाने वाली शिक्षा वर्तमान आधुनिक युग में महत्वहीन है। साक्षात्कार से पता चला कि **"पति, वर्तमान पढ़ी–लिखी महिला के लिए सुख–दुःख में साथ देने वाला केवल एक साथी है और कुछ नहीं।"**

भारतीय मध्य वर्ग के स्त्री–पुरुष दोनों ने विवाह को आर्थिक अनिवार्यता के रूप में स्वीकार कर लिया है। बढ़ती मंहगाई और सीमित आय का तालमेल बैठाने के लिए पुरुष को एक जिम्मेदार पत्नी की जरूरत महसूस होती है तो मध्यवर्गीय स्त्री के लिए विवाह भी एक ठोस आर्थिक आधार का पर्याय बन गया है। अर्थात् विवाह का व्यवसायीकरण हो गया है। विवाह के इस बदलते स्वरूप के साथ इससे जुड़ी अन्य समस्याएँ भी सामने आने लगी हैं जिनमें पति–पत्नी के मध्य टूटते मूल्य, ईर्श्या, स्पर्धा, हीन भावना और संवादहीनता की स्थितियाँ अब आम हो गयी हैं और

नारी में अपने अस्तित्व के प्रति जागरूकता के साथ टूटते घर परिवार और सम्बन्ध–विच्छेद की त्रासदी भी उत्पन्न हुई है। वास्तव में आधुनिकता के बावजूद हमेशा से यह मान्यता रही है कि पति–पत्नी के आत्मीय सम्बन्धों को सदाबहार बनाये रखने के लिए गहन मानवीय मूल्यों से जुड़े रहने और उसके लिए संघर्ष करने की आवश्यकता है। अगर सम्बन्धों में कहीं कोई गड़बड़ नजर भी आये तो उसे नजर अंदाज करके एक दूसरे का सुख–दुःख झेलते रहना चाहिए।

यह एक परम्परागत सोच और उससे जुड़ी मानसिकता है। इसी सन्दर्भ में भी छात्राओं के विचारों को जानना आवश्यक प्रतीत हुआ। इसके लिए उनसे पूछा गया कि **"क्या पति–पत्नी के बीच मधुर सम्बन्ध खत्म होने से दोनों को परम्परागत नीति मूल्यों का निर्वाह करते रहना चाहिए या सम्बन्ध विच्छेद को स्वीकार कर लेना चाहिए?"** इससे सम्बन्धित प्रत्युत्तरों (सारणी संख्या–7) से स्पष्ट होता है कि समग्र की अधिसंख्यक (68.33 प्रतिशत) छात्राएँ मानती हैं कि ऐसी परिस्थिति में सम्बन्ध विच्छेद कर लेने चाहिए। जबकि बहुत कम (8.33 प्रतिशत) छात्राएँ परम्परा का निर्वाह करते रहने के पक्ष में हैं अर्थात् सुख–दुःख झेलते रहना चाहिए। क्योंकि सम्बन्ध विच्छेदन के पष्चात् आर्थिक एवं सामाजिक असुरक्षा का सामना करना पड़ता है जो स्त्री को किसी भी स्थति में पहुँचा सकता है। (23.33 प्रतिशत) छात्राएँ इस सम्बन्ध में अनभिज्ञता प्रकट करती है। जहाँ तक स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की छात्राओं के तुलनात्मक अध्ययन का प्रश्न है तो उनके विचारों में लगभग समानता है।

अब तक नारी का कर्मक्षेत्र घर की ही परिधि माना जाता रहा है। वहाँ भी महत्वपूर्ण निर्णय, रूचि और दृष्टिकोण घर के मुखिया पुरुष का ही सर्वमान्य रहता आया है। दहलीज के भीतर भी मुख्य भूमिका पति–पिता, पुत्र की ही रही है और नारी का अस्तित्व एवं सार्थकता उसमें माँ, पत्नी, बहू होने में ही माना जाता रहा है। आज स्त्री का कार्यक्षेत्र घर और बाहर दोनों में अधिक महत्वपूर्ण और विस्तृत हो गया है। वास्तविक जीवन में वह अनेक पदों पर आसीन है और कार्यरत है। वह आज डॉक्टर, वकील, जज, पुलिस, नेता, अभिनेता सब कुछ है। जाहिर है कि आज की नारी पति से अलग स्वतंत्र व्यक्तित्व जी रही है।

"क्या नारी के लिए गृहस्थी (पति व बच्चे) ही जीवन है या अपनी निजी पहचान बनाने के लिए उससे आगे सोचना चाहिए?" इस सम्बन्ध में छात्राओं के प्रत्युत्तरों (सारणी संख्या–8) से स्पष्ट होता है कि अधिसंख्यक (74.17 प्रतिशत) छात्राओं का मानना है कि गृहस्थी ही सब कुछ नहीं है, अपितु मंजिले और भी हैं, जहां और भी हैं। दूसरी ओरे बहुत कम (10.83 प्रतिशत) छात्राओं

के विचार से विवाह के पश्चात् पति और बच्चे ही उनका जीवन होगा, वह उसी में खो जाना चाहती हैं। 15 प्रतिशत छात्राओं ने इस सम्बन्ध में अनभिज्ञता जाहिर की। इस सम्बन्ध में स्नातकोत्तर स्तर की छात्राएँ स्नातक स्तर की छात्राओं की अपेक्षा अधिक प्रगतिशील हैं।

इस समूचे सन्दर्भ में अध्ययन की दो प्रमुख परिकल्पनाओं (1) वर्तमान भारतीय नारी ने परम्परागत नैतिकता के ढकोसले को उतार फेंका है, तथा (2) भारतीय नारी अब सोचने लगी है कि जीवन वही नहीं जो हमें दिया गया है, अपितु जीवन वह है जो हम अपने लिए जीते हैं, की पुष्टि हो जाती है।

यद्यपि अध्ययन क्षेत्र की शत–प्रतिशत छात्राएँ हमारी उपरोक्त दोनों परिकल्पनाओं की कसौटी पर खरी नहीं उतरती, किन्तु अधिकसंख्यक छात्राएँ नारी के दायरे को सीमित कर देने वाली परम्परा से बाहर निकलने तथा अपने लिए भी जीने का दम भरती हैं, इसलिए हमारी उपकल्पनाएँ पूर्णतः पुश्ट हो जाती है।

नारी के सनदर्भ में मूल्य विघटन और परम्परागत नैतिकता से सम्बन्धित उपर्युक्त के प्रकाश में यह कहा जा सकता है कि आज की शिक्षित नारी ने आधुनिक युग के साथ बदलते मूल्य और परम्परागत सामाजिक मूल्यों की टकराहट के चलते परम्परागत नैतिकता के ढकोसले को उतार फेंका है। वह हर हाल में स्त्री शिक्षा और आर्थिक निर्भरता की अनिवार्यता पर बल देती है।

पुरातन सामाजिक, धार्मिक कुरीतियों की समाप्ति चाहती है। स्वावलम्बी और स्वाभिमान उसके व्यक्तित्व का एक प्रमुख गुण बन चुका है। यद्यपि वे मानती हैं कि वर्तमान समय में जो पति–पत्नी सम्बन्ध अधिसंख्यक रूप में टूट रहे हैं उनका कारण पारिवारिक मूल्य विघटन है अर्थात् भारत जैसे देष में संयुक्त परिवारों की टूटन का असर पति–पत्नी सम्बन्धों पर भी पड़ा है। कहने का अभिप्राय यह है कि समाज में मूल्यों का विघटन हो रहा है, नैतिकता के मानदण्ड बिखर रहे हैं। स्त्री पुरुश के सम्बन्ध बदल रहे हैं।

परिणाम स्वरूप शिक्षित नारी के भीतर परम्परागत रूढ़ियों, मूल्यों और नैतिकताओं के बन्धन को नकारकर नये परिवर्तन की ओर बढ़ने की आकांक्षा और संकल्प जन्म ले चुके हैं। पति को देवता मानने वाली परम्परागत नैतिकता उनके भीतर नहीं है। पति– परमेश्वर नहीं बल्कि जीवन सफर में महज एक साथी है।

वे सम्बन्धों की टूटन को भी अधिक समय तक ढोना नहीं चाहती अपितु सम्बन्ध विच्छेद में विश्वास करती है। ठीक भी है, क्योंकि *किन्हीं भी दो व्यक्तियों में चाहे वे पति–पत्नी ही क्यों न हों आपस का प्यार सदाबहार तब तक*

रह सकता है, जब जीवन संग्राम में पुरुष और स्त्री (पति–पत्नी) दोनों सहयोद्धा हों साथ लड़े, साथ मरें, और एक दूसरे का अंश लेकर दोनों का व्यक्तित्व बनें, स्त्री को घर के तहखाने में कैद न किया जाये, उसकी प्रतिभाओं को मुक्त किया जाये, अर्थोपार्जन के लिए भी ताकि उसका स्वतंत्र अस्तित्व हो और वह जाने कि वह भी किसी की आश्रिता नहीं है, पति और बच्चे ही उसका जीवन नहीं है, बल्कि मंजिले अभी और भी हैं।

अतः स्पष्ट होता है कि वर्तमान में विभिनन सामाजिक मूल्यों का विघटन हो रहा है जिसके फलस्वरूप नारी सन्दर्भ में परम्परागत नैतिकता का कोई औचित्य नहीं रह गया है।

सारणी संख्या–1

नारीः शिक्षा का महत्व एवं आर्थिक निर्भरता की अनिवार्यता

दृष्टिकोण	छात्राओं की संख्या				योग	
	स्नातक		स्नातकोत्तर			
हाँ	46	76.67	48	80.00	94	78.33
नहीं	10	16.67	12	20.00	22	18.33
पता नहीं	4	0.66	-	0.00	4	3.33
योग	60	100.00	60	100.00	120	99.99

सारणी संख्या–2

विभिन्न सामाजिक कुरीतियों की समाप्ति एवं नये सामाजिक मूल्यों की स्थापना

दृष्टिकोण	छात्राओं की संख्या				योग	
	स्नातक		स्नातकोत्तर			
हाँ	6	76.67	52	86.67	98	81.67
नहीं	10	667.00	5	5.00	7	5.83
पता नहीं	4	6.66	5	8.33	15	12.50
योग	60	100.00	60	100.00	120	100.00

सारणी संख्या–3

मुक्ति की चाह के फलस्वरूप स्वावलम्बन एवं स्वाभिमान

दृष्टिकोण	छात्राओं की संख्या				योग	
	स्नातक		स्नातकोत्तर			
हाँ	30	50.00	32	53.33	62	51.67
नहीं	17	28.33	15	25.00	32	26.67
पता नहीं	13	21.67	13	21.67	26	21.66
योग	60	100.00	60	100.00	120	100.00

सारणी संख्या–4

पारिवारिक मूल्य विघटन और पति–पत्नी सम्बन्धों में दरार

दृष्टिकोण	छात्राओं की संख्या				योग	
	स्नातक		स्नातकोत्तर			
हाँ	45	75.00	40	66.67	85	70.83
नहीं	10	16.67	8	13.33	18	15.00
पता नहीं	5	8.33	12	20.00	17	14.17
योग	60	100.00	60	100.00	120	100.00

सारणी संख्या–5

नया आधुनिक बोध अर्थात् नारी चाहर दीवार से बाहर

दृष्टिकोण	छात्राओं की संख्या				योग	
	स्नातक		स्नातकोत्तर			
हाँ	33	55.00	20	33.33	63	52.50
नहीं	25	41.67	32	53.33	57	47.50
पता नहीं	2	3.33	8	13.33	10	8.33
योग	60	100.00	60	100.00	120	99.99

सारणी संख्या–6

पतिः जैसा भी है देवता है

दृष्टिकोण	छात्राओं की संख्या				योग	
	स्नातक		स्नातकोत्तर			
हाँ	2	3.33	0	0.00	2	1.67
नहीं	58	96.67	60	100.00	118	98.33
पता नहीं	0	0.00	0	0.00	0	0.00
योग	60	100.00	60	100.00	120	100.00

सारणी संख्या–7

पति–पत्नी सम्बन्धों में कटुता के फलस्वरूप नीति–मूल्यों का निर्वाह या सम्बन्ध विच्छेद

दृष्टिकोण	छात्राओं की संख्या				योग	
	स्नातक		स्नातकोत्तर			
हाँ	40	66.67	42	70.00	82	68.33
नहीं	5	8.33	5	8.33	10	8.33
पता नहीं	15	25.00	13	21.67	28	23.33
योग	60	100.00	60	100.00	120	100.00

सारणी संख्या–8

गृहस्थी ही जीवन है या मंजिले और भी हैं।

दृष्टिकोण	छात्राओं की संख्या				योग	
	स्नातक		स्नातकोत्तर			
हाँ	8	13.33	5	8.33	13	70.83
नहीं	42	70.00	47	78.33	89	74.17
पता नहीं	10	16.67	8	13.33	18	15.00
योग	60	100.00	60	100.00	120	100.00

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. *श्रीवास्त ए.आर.एन. भारतीय सामाजिक समस्याएँ, प्रथम संस्करण 2001–2002*
2. *फेमिना हिन्दी अक्टूबर–1990*
3. *साभार, वामा, सितम्बर 1990*